www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सचित्र बाल कथाएँ

भलाई का मार्ग

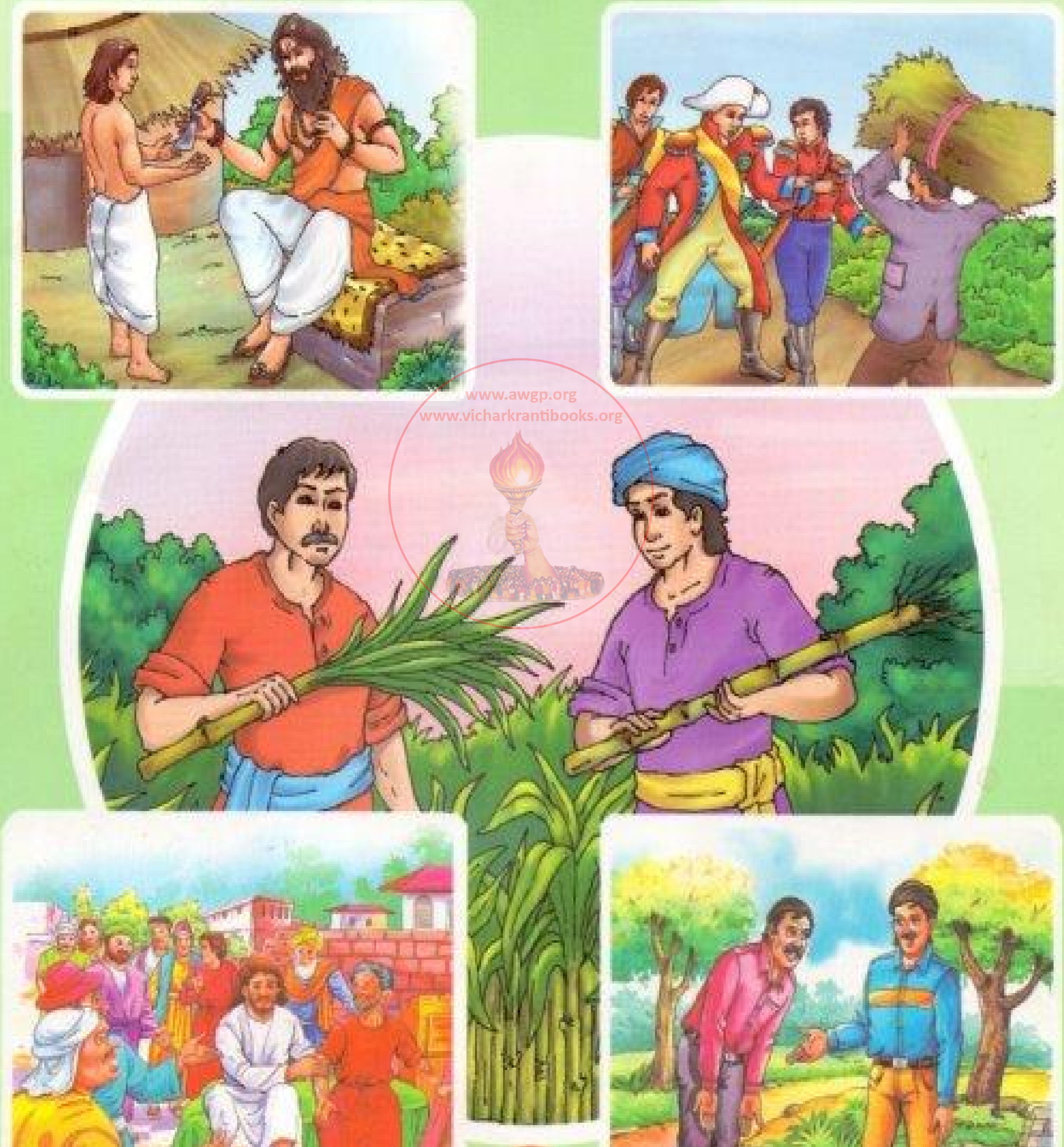

2

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY
SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

घाट का पत्थर

एक पहाड़ की ऊँची चोटी से दो पत्थर साथ-साथ लुढ़कते हुए नीचे आए थे। उनमें से एक पत्थर पर धोबी अपने गंदे कपड़ों को पटक-पटक कर साफ करता था और एक शिवलिंग के रूप में नदी के किनारे बने मंदिर में पूजा जाता था।

धोबी के पत्थर ने एक दिन दुखी मन से शिवलिंग को संबोधित करते हुए कहा— ''तात आप धन्य हैं, देव मंदिर में प्रतिष्ठित हैं। भव-बंधनों में जकड़े प्राणी आपके पास आकर कितनी शांति, कितना संतोष अनुभव करते हैं। काश, यह पुण्य सुयोग हमें भी मिलता।'' शिवलिंग बना पत्थर अपने बारे में ऐसी प्रशंसा सुनकर गंभीर हो उठा। बोला—''तात! आपका दु:ख करना बेकार है, आप नहीं जानते हम तो मात्र यहाँ आने वाले लोगों को क्षणिक शांति और शीतलता प्रदान करते हैं। आप तो बराबर बिना मन में कोई भाव लाए हर किसी का मैल धोते रहते हैं। आप की साधना धन्य है और मेरे से ज्यादा ऊँची है। मेरे पास आने की प्रथम कसौटी तो आप ही हैं। इसीलिए जब लोग मेरी उपासना करते हैं, तब मैं आपकी किया करता हूँ।'' घाट का पत्थर गदगद् हो उठा और दुगुने उत्साह से लोगों का मैल धोने लगा। इसीलिए तो कहते हैं कर्म ही पूजा है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जूतों की शिकायत

एक सनकी पैर में पहने हुए जूतों की बहुत शिकायत कर रहा था—वे तंग हैं और काटते हैं। उसका बड़बड़ाना सुनकर एक समझदार ने कहा—"यदि ऐसा ही है, तो उसे उतार क्यों नहीं देते। बिना जूते के भी तो चला जा सकता है।" पगले ने कहा—"ऐसा नहीं कर सकता। यही तो मेरा एकमात्र सहारा है। घरवालों और पड़ोसियों से पटरी नहीं खाती, तो इस जूते को देखकर ही मन बहलाता हूँ और सोचता हूँ कि यही एक तो अपना है। इतना नजदीक इतनी देर और कौन साथ रहता है।" समझदार चलता बना। ऐसे पत्थर से सिर फोड़ने में उसने समय की बरबादी देखी। जिससे शिकायत है, उसे तो छोड़ नहीं सकता और चाहता है सब कुछ अपनी मरजी का ही बने, उसकी समस्या का हल कभी नहीं होगा।

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि लाख समझाने पर भी बात समझ में आती नहीं, क्योंकि पुरानी आदतें बहुत कठिनाई से छूटती हैं।

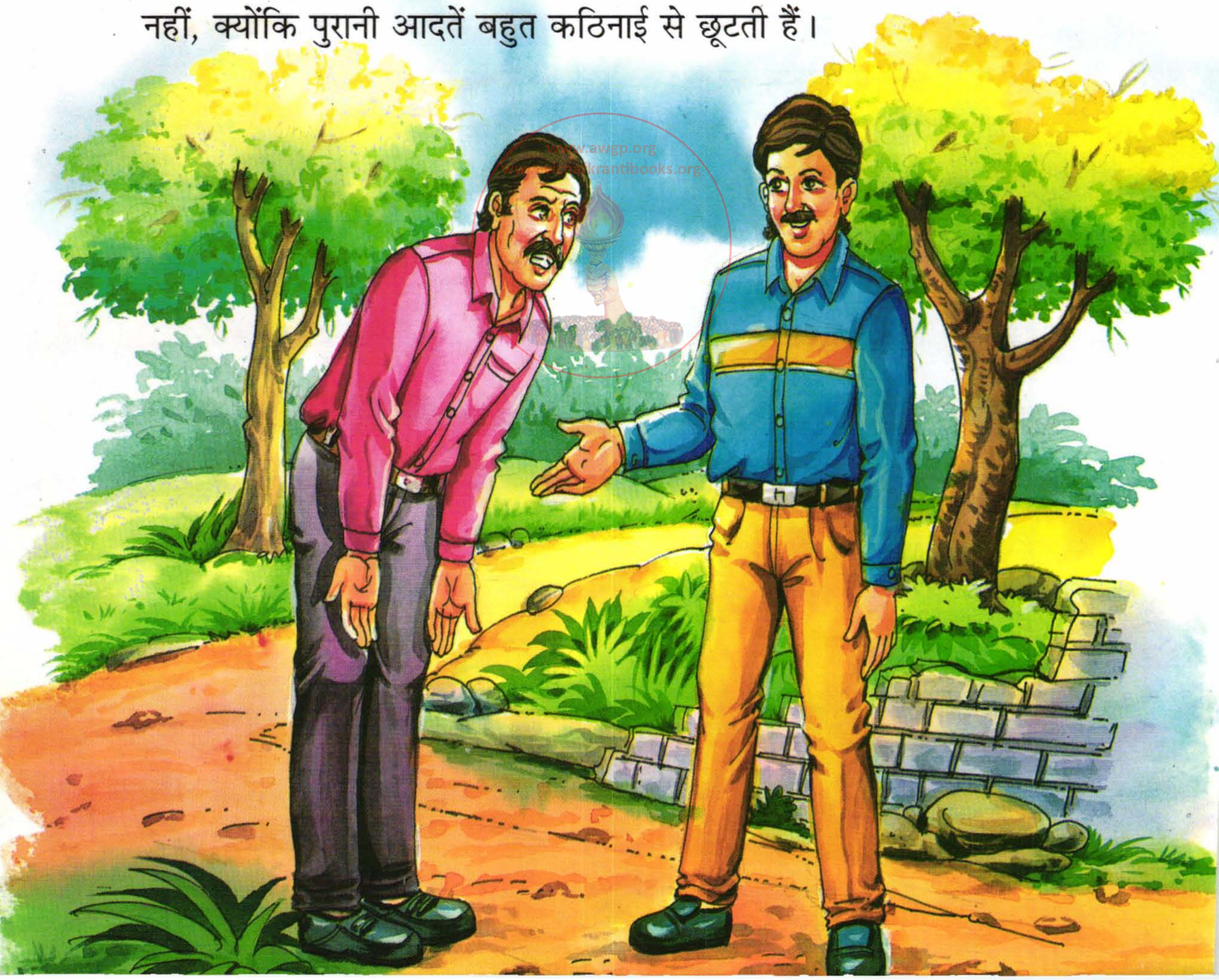

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मेहनत की कमाई

एक पहाड़ी रास्ते पर बैठकर एक लड़का जूतों की मरम्मत किया करता था।

एक फ्रांसीसी ने सड़क पर बैठे उस गरीब लड़के से जूते की मरम्मत कराई। उसने उसकी गरीबी को देखते हुए एक रुपया दे दिया। लड़के ने बाकी पैसे लौटा दिए और कहा—"जो मेरा उचित काम का पैसा है, वही मैं लूँगा। मेरी माता ने मुझे सिखाया है कि जितनी मैं मेहनत करूँ, उससे अधिक उसके बदले में न लूँ।" यही बालक आगे चलकर फ्रांस का राष्ट्रपति दगाल बना।

माँ की सीख को मानकर चलने वाले बालक एक दिन महान बनते हैं।

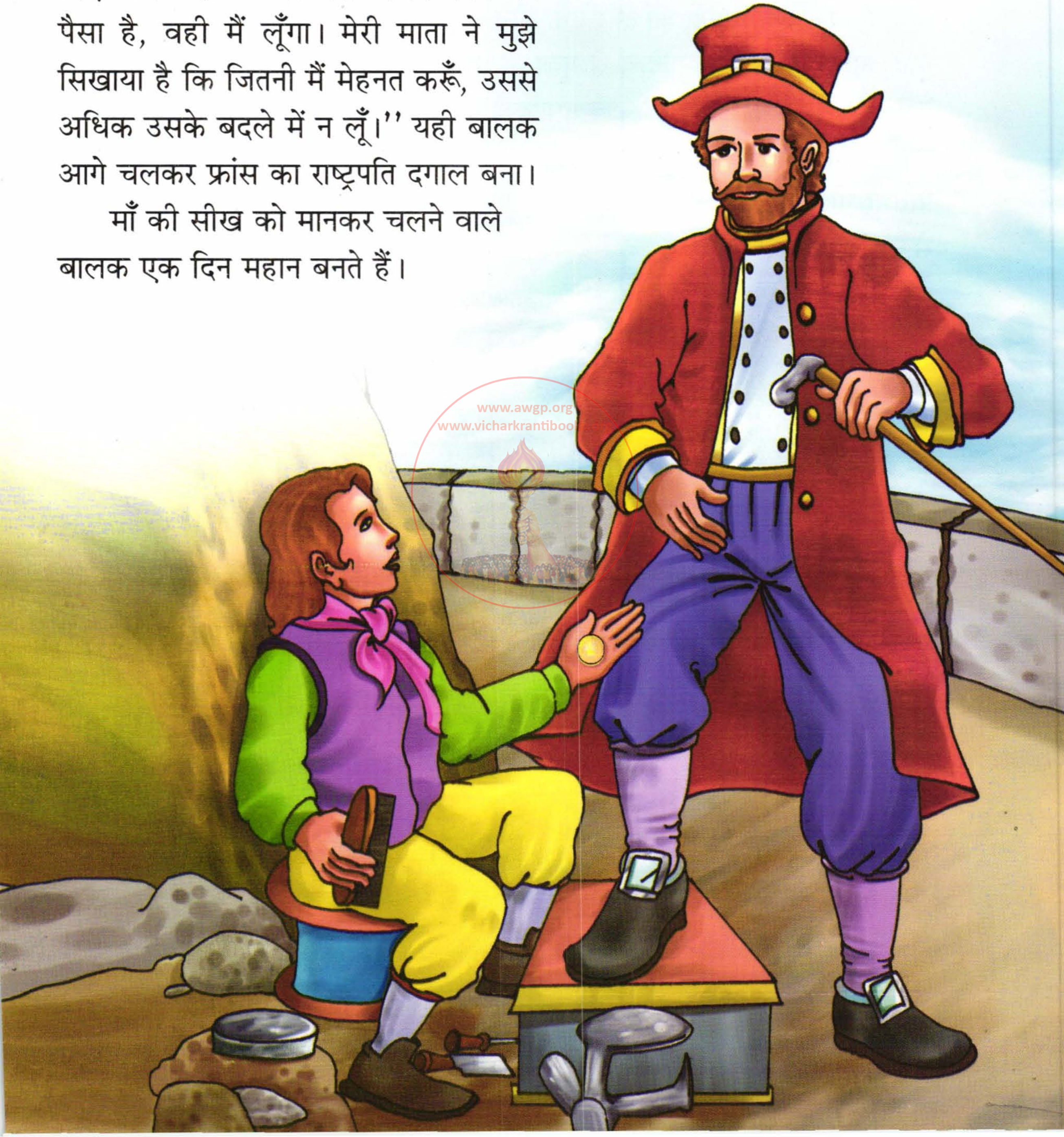

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रतिभा की परख

उद्यान में भ्रमण करते-करते सहसा राजा विक्रमादित्य महाकवि कालिदास से बोले—"आप कितने प्रतिभाशाली हैं, मेधावी हैं, पर भगवान ने आपका शरीर भी बुद्धि के अनुसार सुंदर क्यों नहीं बनाया?" कुशल कालिदास राजा के घमंड से भरे वाक्य समझ गए। उस समय तो वे कुछ भी न बोले। राजमहल में आकर उन्होंने दो पात्र मँगाए—एक मिट्टी का और एक सोने का। दोनों में जल भर दिया गया। कुछ देर बाद कालिदास ने विक्रमादित्य से पूछा—"राजन किस पात्र का जल अधिक शीतल है?" "मिट्टी के पात्र का"—विक्रमादित्य ने उत्तर दिया। तब मुस्कराते हुए कालिदास बोले—"जिस प्रकार शीतलता पात्र के बाहरी आधार पर निर्भर नहीं है, उसी प्रकार प्रतिभा भी शरीर की आकृति पर निर्भर नहीं है। विद्वत्ता और महानता का संबंध शरीर से नहीं आत्मा से है।"

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गांधी जी की मितव्ययता

गांधी के सामने डाक का ढेर लगा था। वह आए हुए प्रत्येक पत्र को ध्यान से पढ़ते जाते और जो हिस्सा कोरा होता उसे कैंची से काटकर अलग रख लेते। एक सज्जन वहीं पास में बैठे थे और बहुत देर से गांधी जी की कतरनी देख रहे थे। उन्होंने बहुत आश्चर्य से पूछा—"मैं यह जानना चाहता हूँ कि आप इन कतरनों को एक ओर एकत्रित कर क्यों रखते जा रहे हैं? इनका क्या उपयोग है?"

गांधी जी ने कहा—"मुझे जब पत्रों के उत्तर देने होते हैं, तब मैं इन्हीं कतरनों का उपयोग करता हूँ। यदि ऐसा न करूँ तो यह कागज बेकार हो जाएँगे और इससे दो प्रकार की हानियाँ होंगी—एक तो बेकार में ही खरच में वृद्धि हो जाएगी और दूसरे राष्ट्रीय संपत्ति नष्ट होगी। किसी देश में जितनी वस्तुएँ होती हैं, वह सब उस देश की संपत्ति मानी जानी चाहिए। हमारा देश निर्धन है। ऐसी स्थिति में हमें धन का दुरुपयोग न करना चाहिए।"

गांधी जी की मितव्ययता का एक अंश भी हम अपना लें तो हमारी तेजी से प्रगति होने में देर न लगे।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मुझे रोको मत, बहने दो

एक तालाब के पास एक छोटी नदी बह रही थी। बरसात में तालाब भरा रहता, बाद में सूख जाता था। नदी तो छोटी थी परंतु उसको हिमालय पर्वत से जल मिलता रहता था तो बहती ही रहती और आगे चलकर गंगा में मिल जाती, फिर सागर में समा जाती।

एक दिन तालाब बोला—''नदी रानी मैं और तुम दोनों एक साथ रहें, तुम इतना कष्ट क्यों उठाती हो?''

नदी ने कहा—''तुम केवल सीमित दायरे में ही रहते हो, फिर तो मैं कहीं और जगह न जा सकूँगी, इसलिए मुझे रोको मत। बहते रहने में ही मेरा और संसार का भला है।''

दूसरों के काम आ सके वही जीवन सार्थक होता है।

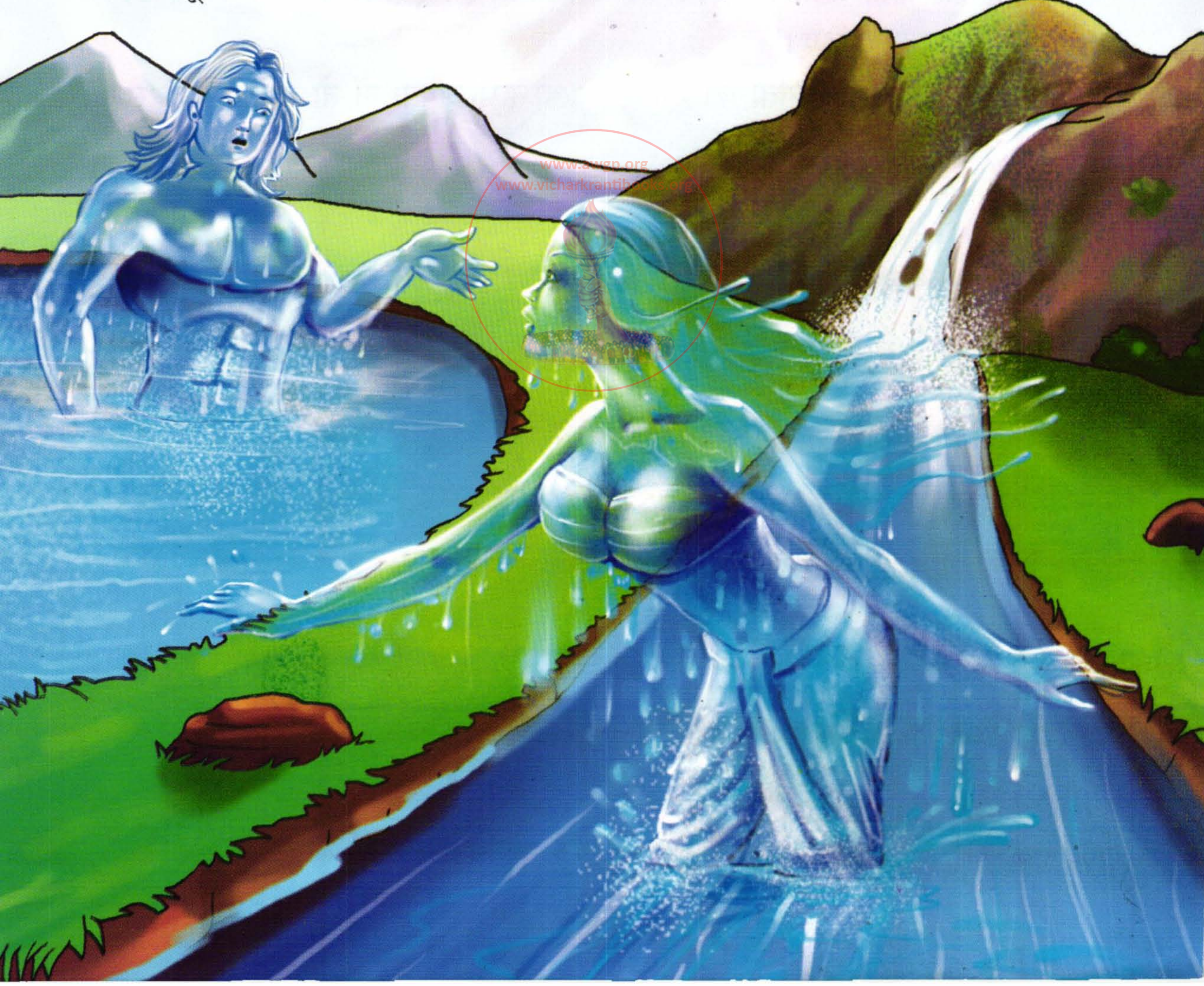

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

राजा का शंका-समाधान

एक विद्वान और जिज्ञासु राजा की सभा में हर समय विद्वानों का जमघट लगा रहता था। एक रात राजा अपने शयन-कक्ष में लेटा था। ठीक सामने दीपक जल रहा था। सहसा राजा के मन में एक प्रश्न उठा—"दीपक का प्रकाश कितना उज्ज्वल है? न तेल काला है और न बाती काली है। फिर भी यह काजल उगल रहा है, ऐसा क्यों होता है?" प्रातः होते ही उनने यह समस्या विद्वानों के समक्ष रखी। विद्वानों ने अपने-अपने विचार रखे, पर राजा संतुष्ट न हुआ। अंत में राजा ने राजसभा में बैठे एक वृद्ध महात्मा से पूछा—"गुरुवर! जग को प्रकाश देने वाले दीपक के पास सिर्फ कालिमा ही क्यों रह जाती है?" वृद्ध महात्मा बोले—"राजन्! पहले मेरे प्रश्न का उत्तर दें, दीपक क्यों जलाया जाता है?" "प्रकाश के लिए"—राजा ने कहा। "अर्थात अंधकार को नष्ट करने के लिए, इसका अर्थ यह हुआ कि दीपक अंधकार को खाता है। राजन, जो जैसा खाएगा, वह वैसा ही उगलेगा। तभी तो राजन यह कहा जाता है कि जैसा अन्न वैसा मन। जैसा पानी वैसी बानी।" राजा इस समाधान से पूर्णतया संतुष्ट हो गए।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पहले गलो, फिर ढलोगे

मिट्टी ने कुम्हार से कहा—"मुझे ऐसा पात्र बना दीजिए, जो अपने में शीतल जल भरकर प्रियतम के होठों से लग सके।" कुम्हार ने कहा—"यह तभी संभव है, जब तुम फावड़े से खुदने, गधे पर चढ़ने, डंडे से पिटने, पैरों से रौंदी जाने, आग में तपने का साहस जुटा सको। इससे कम में किसी की महान आकांक्षाएँ पूरी हुई नहीं हैं।"

कठिनाइयों से गुजरकर ही व्यक्ति महान बनता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीने की प्रेरणा

एक दिन, दो दिन और लगातार कई दिन तक भी रात-रात भर सितारों की गिनती करते देखकर आखिर एक दिन माँ ने अपने बच्चे से पूछ ही लिया—"बेटे! तुम रात भर आकाश की ओर मुँह किए क्या गिना करते हो?" "आकाश के सितारे माँ! बहुत प्रयत्न करता हूँ, किंतु आकाश इतना विराट और नक्षत्र इतने अधिक हैं कि वे गिनने में नहीं आते।" माँ ने थपकी दी और बोली—"बेटा! बहुत देर हो गई सो जा, ये सितारे गिनने को नहीं वरन इसलिए बनाए गए हैं कि लोग उन्हें देखकर स्वयं भी प्रकाशपूर्ण जीवन जीना सीखें।"

महापुरुषों के जीवन भी इसी तरह प्रेरणाप्रद बनते हैं। उनकी जीवनियाँ पढ़कर लोग इसी प्रकार प्रेरणा ग्रहण करते हैं।

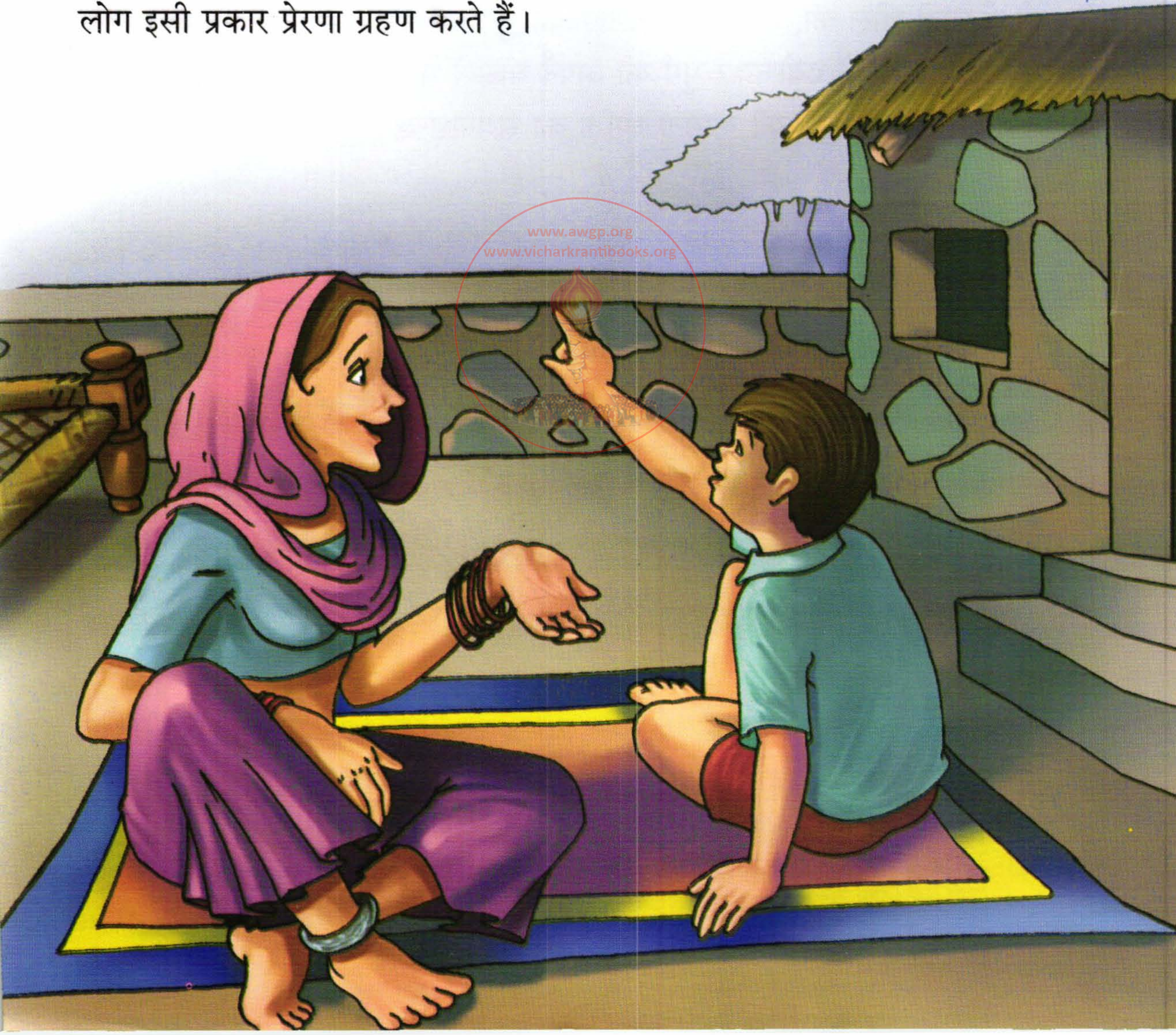

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कीर्ति की इच्छा

एक गाँव में एक कूड़े के ढेर पर दो मुर्गे बैठे थे। उनमें किसी बात पर आपस में लड़ाई हो गई और दोनों आपस में गुत्थमगुत्था हो गए। अधिक तगड़े मुर्गे ने दूसरे को पराजित कर भगा दिया, तो आसपास घूम रही मुर्गियाँ विजयी मुर्गे के चारों ओर जमा होकर उसका यशोगान करने लगीं। प्रशंसा से पुलकित मुर्गे की यश-कामना और तेज हुई। उसने कहा कि पास-पड़ोस में भी उसकी कीर्ति जानी जाए और कही जाए। इस तीव्र आकांक्षा ने उसे प्रेरित किया और वह पास के खलिहान में चढ़ गया। अपने पंख फड़-फड़ाकर उच्च स्वर में बोला—"मैं विजयी मुर्गा हूँ। मुझे देखो। मेरे समान बलवान कोई अन्य मुर्गा नहीं है।" उसका अंतिम वाक्य समाप्त होने के पूर्व ही मँडराती चील की, उस ऊँचे चढ़े एकाकी मुर्गे पर दृष्टि पड़ी। उसने एक झपट्टा मारा और पंजों में दबोचकर मुर्गे को अपने घोंसले में ले गई।

कभी-कभी यश की कामना व्यक्ति का सर्वनाश कर देती है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ज्ञान साधना के प्रतिफल

एक हृष्ट-पुष्ट और बलिष्ठ शरीर का स्वामी नवयुवक किसी काम से कचहरी में गया। पढ़ने-लिखने में वह कोरा था। इसलिए उसे मुंशी के पास जाना पड़ा। मुंशी के पास जाकर वह बोला—"भई! मेरी अरजी लिख दो। जरा जल्दी है।"

अरजी लिखाने के लिए और भी लोग खड़े थे। सो मुंशी ने कहा—"लाइन से लग जाओ, नंबर आने पर अरजी लिख देंगे।"

दोपहर बाद दो बजे कहीं उसका नंबर आया। इतनी देर में वह खड़ा - खड़ा थककर चूर हो गया। रह-रह कर उसे यह अनुभव हो रहा था कि शारीरिक दृष्टि से समर्थ और बलवान होते हुए भी वह बौद्धिक दृष्टि से परावलंबी ही है। उस दिन से उसने स्वास्थ्य साधना के साथ-साथ ज्ञान साधना पर भी ध्यान देना आरंभ किया। दिन-रात एक करके उसने अपनी बौद्धिक क्षमता बढ़ाई। उसी का परिणाम था कि एक दिन वह बिहार प्रांत का स्वायत्त मंत्री बना। उन्हें आज भी लोग गणेश दत्त सिंह के नाम से जानते हैं।

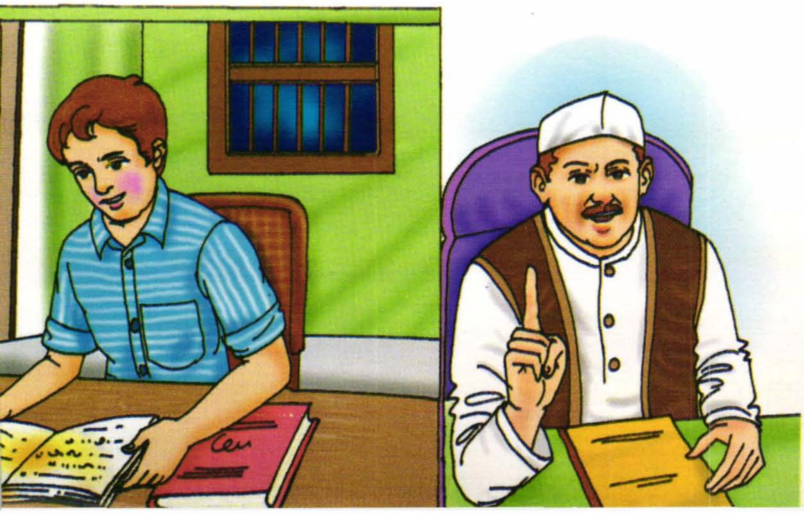

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भगवान तो देख रहा है

मंगोलियावासी चांगशेन नामक न्यायाधीश अफसर के पास उनका एक मित्र पहुँचा और अशरफियों की थैली भेंट करते हुए बोला—"आप मेरा काम कर दें। इस लेन-देन की बात आपके और मेरे अतिरिक्त और कोई नहीं जानेगा।"

चांगशेन कभी किसी से रिश्वत नहीं लेते थे। भले ही अपनी इस आदर्शवादिता के कारण उन्हें धन की कमी में जीवन जीना पड़ता था। उन्होंने अपने धनी मित्र को इस बात का उत्तर दिया—"मित्र! ऐसा न कहो कि कोई नहीं देखता। कोई मनुष्य नहीं देखता तो क्या? सर्वव्यापी परमेश्वर, धरती, आसमान, मेरी आत्मा तो सब कुछ देखते हैं, उनकी नजरों से मेरा यह अनैतिक कर्म कहाँ छिपा रहेगा?" कृपया अपनी अशरफियाँ वापस ले जाइए।

अनीति का उपार्जन महामानवों को कभी स्वीकार्य नहीं होता। यही परंपरा वे अपने परिवारों में भी डालते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

व्याख्यान ही नहीं सेवा भी

एक बार महात्मा ईसा अपने विचार प्रकट करने और प्रश्नों का उत्तर देने के लिए एक सभा में बुलाए गए। सभा में पहुँचते ही उन्होंने देखा कि वहाँ उपस्थित एक व्यक्ति हाथ की पीड़ा से बहुत कष्ट पाता हुआ कराह रहा है। महात्मा ईसा तुरंत उसका उपचार करने में लग गए। उनका यह कार्य देख विरोधियों ने समझा कि वे सभा की कार्यवाही से कतरा रहे हैं। इसलिए एक व्यक्ति ने व्यंग्य करते हुए कहा—"ईसा, तू तो शास्त्रार्थ करने आया है, फिर उस मुख्य कार्य को छोड़कर डॉक्टरी कैसे करने लगा?"

महात्मा ईसा ने बड़े शांत भाव से उत्तर दिया—"क्या तुममें से कोई ऐसा है, जिसके एक ही भेड़ हो और वह कुएँ में गिर जाए तो वह सारे काम को छोड़कर उसे निकालने के लिए न जाए? मेरा मुख्य काम तो पीड़ितों की सेवा करना है, लोगों का दुःख-दरद दूर करने का है। शास्त्रार्थ तथा व्याख्यान तो जीवन के साधारण कार्यक्रम हैं।"

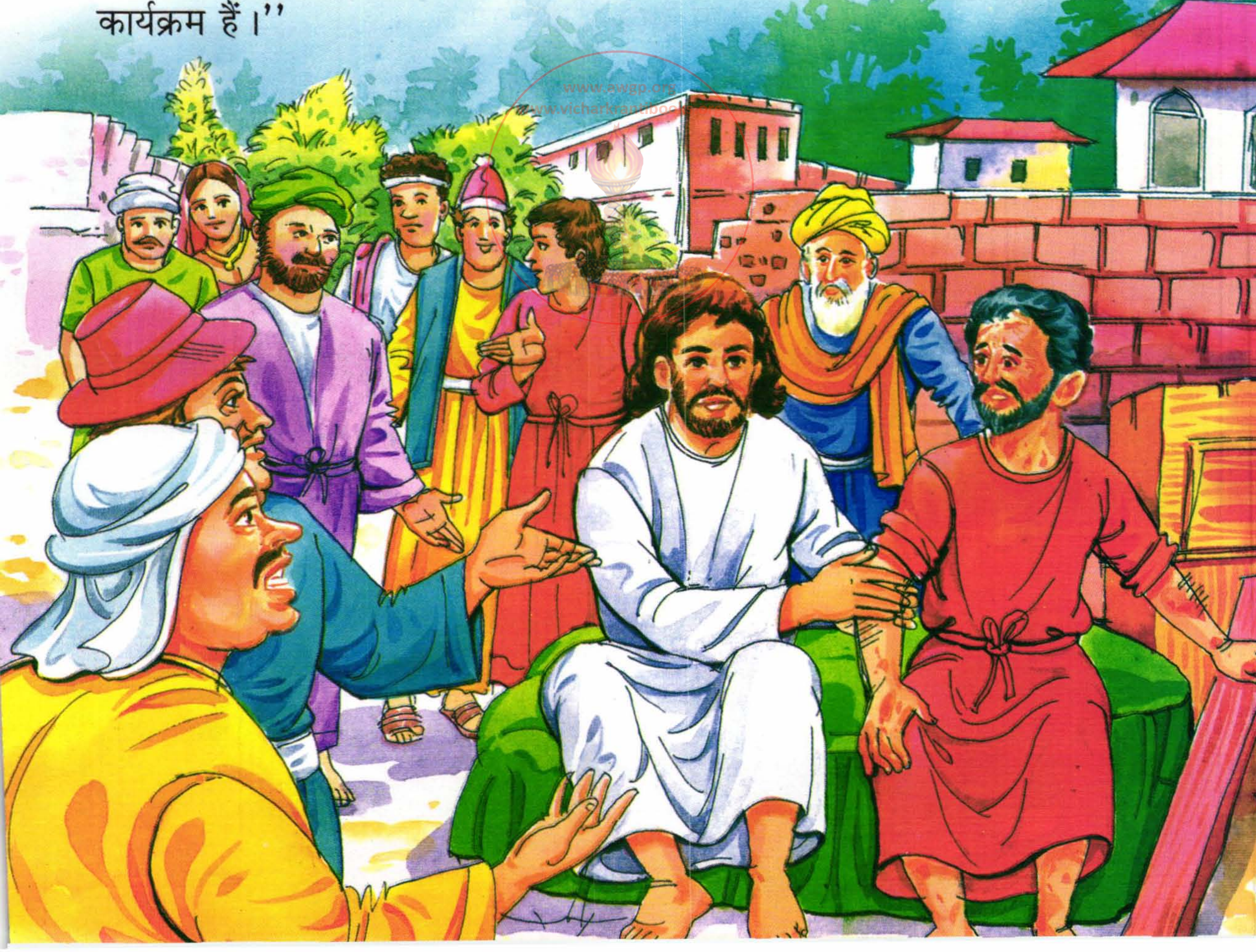

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भलाई का मार्ग

एक व्यक्ति सड़क पर चलते हुए आदमियों का सामान छीन लेता था। एक बार अंधेरी रात में आगे जाने वाले आदमी का सामान छीन लेने के लिए जैसे ही बढ़ा तभी एक कार ने आकर आगे जाने वाले व्यक्ति को टक्कर मार दी। उसका सामान और रुपये जमीन पर गिर गए। वह चालाक आदमी रुपये और सामान उठाने के लिए चला ही था तभी उसे किसी के दरद में कराहने की आवाज आई।

वह सामान बटोरकर चलने को हुआ परंतु उसके अंदर बैठे देवता ने भागने को मना किया और वह रुक गया। वह उस आदमी के पास गया। उसका विवेक जागा और उसने कराहते व्यक्ति को कंधों पर उठाया और उसके उपचार के लिए डॉक्टर के पास ले गया।

इस प्रकार उसने एक भलाई का मार्ग चुना जिस पर चलकर उसे ऐसा आत्मसंतोष मिला जैसा कभी नहीं मिला था। इसके बाद वह भलाई के काम करने में लग गया।

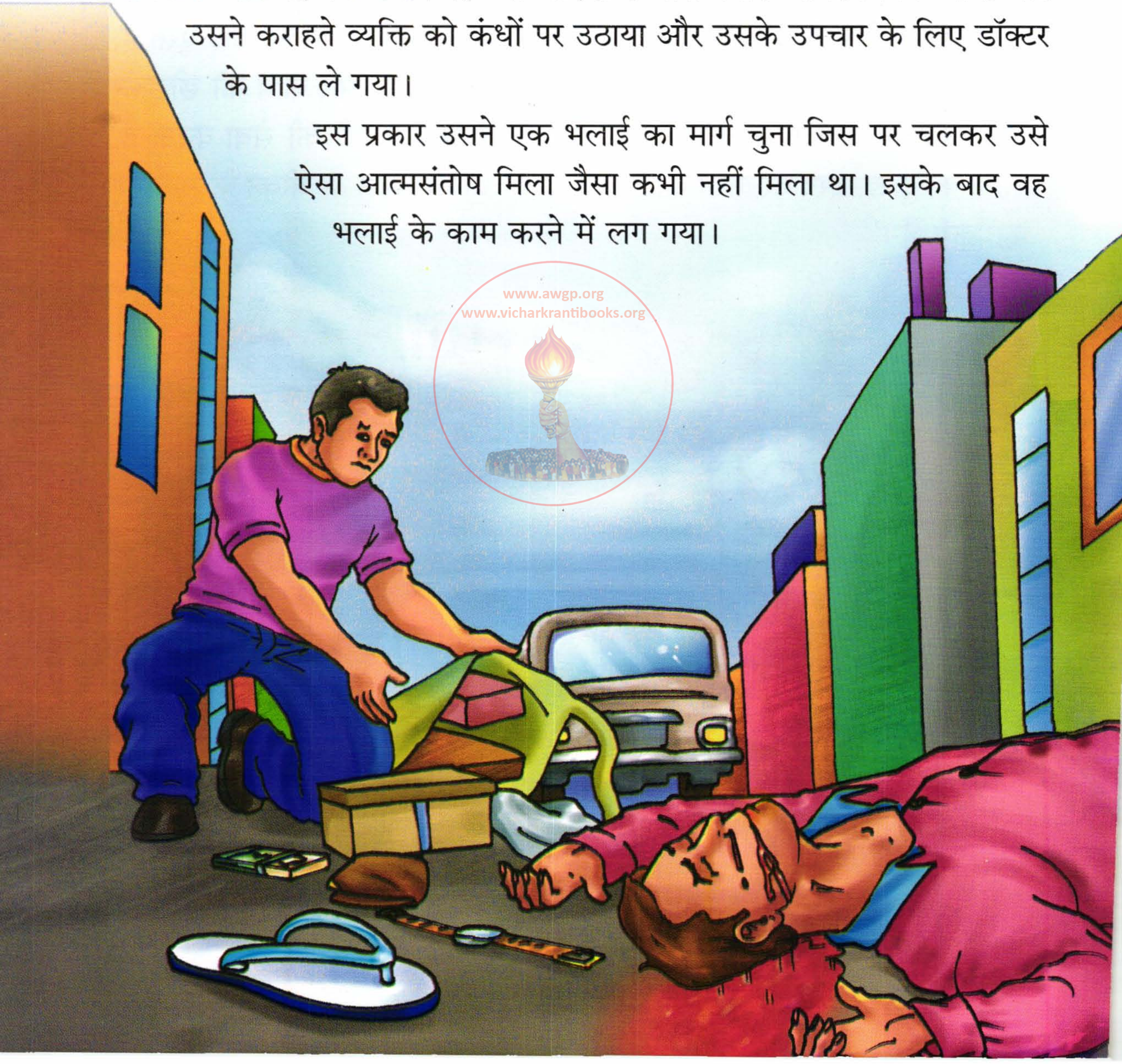

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

श्रमिक का सम्मान

एक बार नेपोलियन अपने साथियों समेत एक राह में जा रहा था। वे लोग पूरा रास्ता घेरकर चल रहे थे, सामने से बोझा लिए एक मजदूर आ रहा था। नेपोलियन ने साथियों को हाथ पकड़कर खींचा और कहा—"श्रम का सम्मान करो और मजदूर के लिए रास्ता दो।"

बाद में उसने साथियों को समझाया कि जिन सत्प्रवृत्तियों को राज्य में बढ़ावा देना है, उनका सम्मान हम स्वयं करेंगे, तो ही उनके प्रति जन उत्साह उभरेगा।

जो कार्य बड़े लोग करते हैं, राजा करते हैं, वही कार्य प्रजा तथा छोटे स्वयं करने लगते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बालक की सूझ-बूझ

एक विद्यालय के वाणिज्य संस्थान में अर्थशास्त्र विषय पढ़ाया जा रहा था। प्राध्यापक द्रव्य, बैंक तथा साखपत्रों की जानकारी दे रहे थे। तब तक जान डी० राकफेलर वहाँ पहुँच गए। प्राध्यापक ने एक छात्र से पूछा—"अच्छा बताइए 'प्रामिसरी नोट' कैसे लिखा जाता है?" छात्र ने मेज पर से चाक उठाई और श्यामपट्ट पर लिखने लगा—"मैं वाणिज्य संस्थान को दस हजार डॉलर देने का वायदा करता हूँ। हस्ताक्षर-जान डी० राकफेलर।" छात्र के बुद्धि-कौशल से राकफेलर इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने उस संस्थान को तत्काल अनुदान स्वरूप दस हजार डॉलर का एक चैक काट दिया।

बालक की सूझ-बूझ ने एक धनवान की सत्प्रवृत्ति को जगाया ही नहीं क्रियान्वित भी कराया।

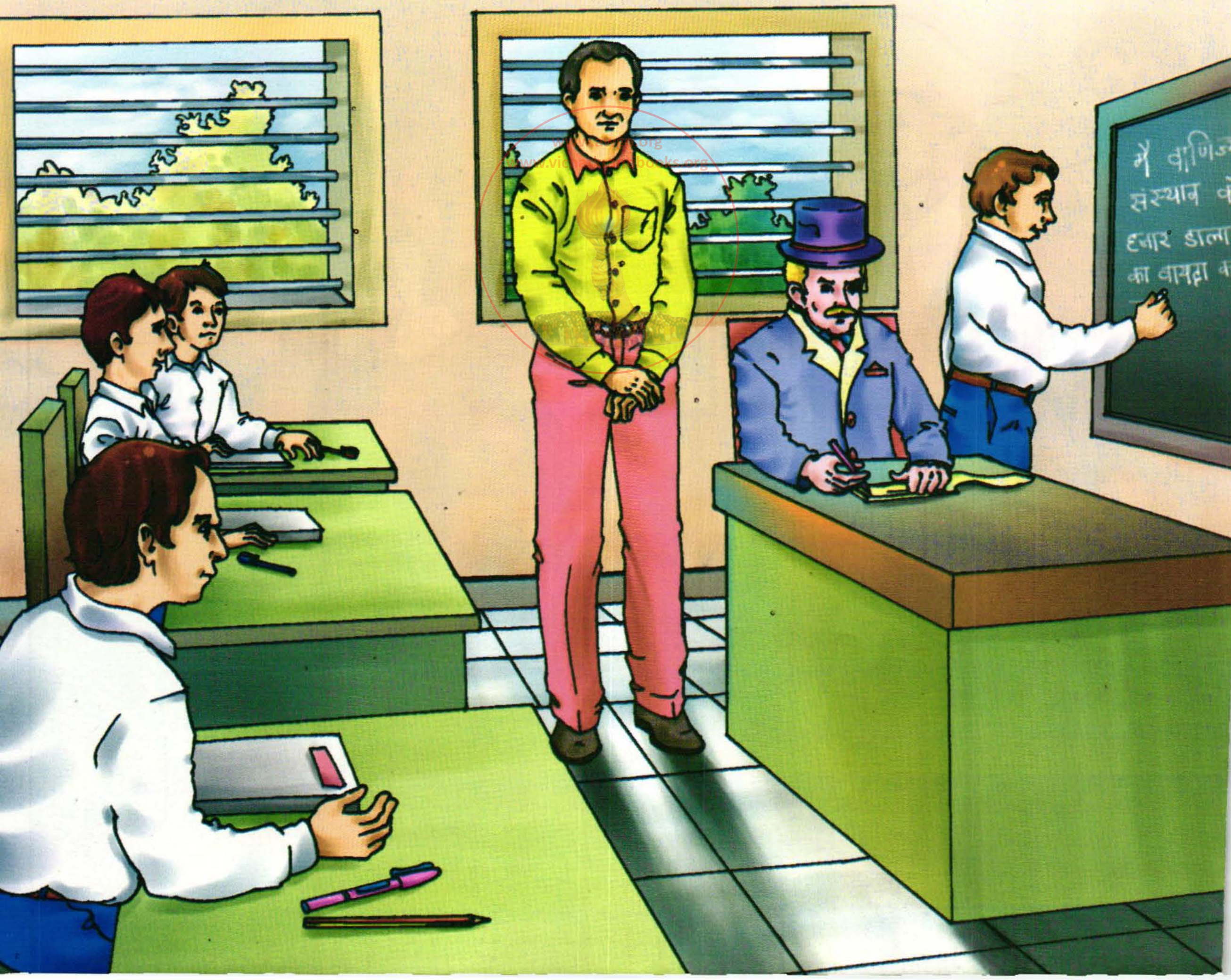

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लड़की नहीं, फरिश्ता

जैसलमेर के राजा युद्ध मोर्चे पर सेना लेकर लड़ने गए थे। किले की रखवाली का भार अपनी कन्या रत्नावली को सौंप गए। वह मरदाने कपड़े पहनकर किले के बुर्जों पर बराबर रखवाली करती।

एक दिन शत्रु सेना के कुछ सैनिक किले की दीवार पर चढ़ने लगे, तो उसने ऊपर से पत्थरों की वर्षा की और खौलता तेल ऊपर से डाला और भी कई घातें किले में प्रवेश करने की शत्रुओं ने लगाईं पर रत्नावली की सूझ-बूझ से एक में भी सफलता न मिली। अंततः शत्रुओं को वापस लौटना पड़ा। वे रत्नावली को लड़की नहीं फरिश्ता बताते रहे।

आक्रमण के समय सूझ-बूझ से काम लेना चाहिए।

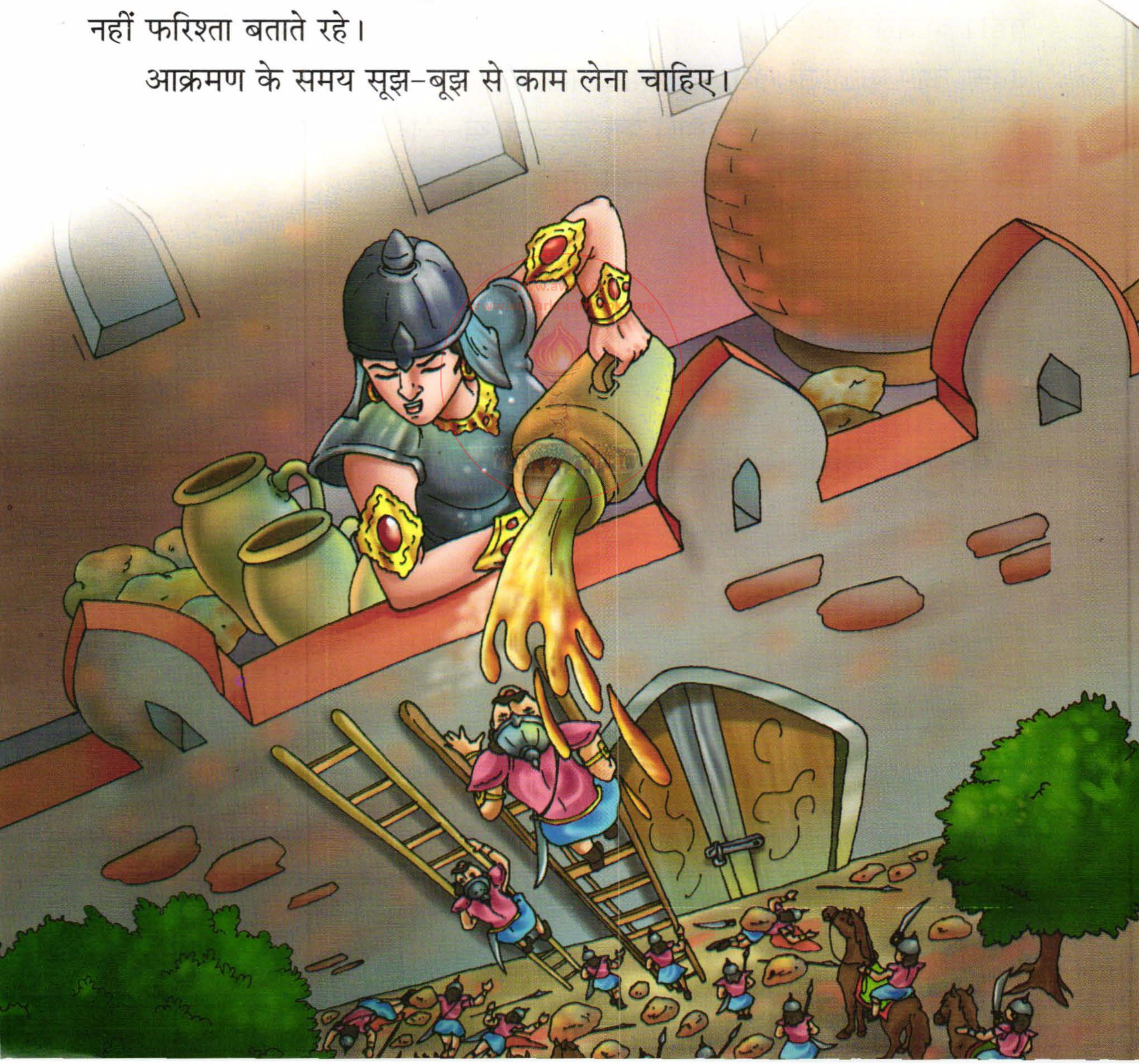

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मेहनत करो सफल बनो

पिता का जब स्वर्गवास हो गया तो अनाथ बच्चे आजीविका की तलाश में अपने गाँव से मात्र लोटा-डोरी लेकर चल पड़े। वे जिस स्थान पर रुकते वहीं कुछ न कुछ कार्य करते और अपने खाने-पीने योग्य कमाकर अपना समय गुजारते। इसी प्रकार अनाथ बच्चे मुंबई शहर में रोजगार की तलाश में पहुँच गए।

वे निरक्षर थे। उन्हें नौकरी नहीं मिलती थी परंतु उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। रात को स्कूल जाकर पढ़ाई करते और दिन में सस्ती धार्मिक पुस्तकें फेरी लगाकर बेचते। धीरे-धीरे एक दुकान किताबों की खोली, फिर काम बढ़ गया तो एक प्रेस लगानी पड़ी। वे जैसा साहित्य प्रकाशित करते थे उनका आचरण भी वैसा ही था। इसलिए उनका काम बढ़ता ही गया, नई मशीनें आती गईं। अध्यवसाय के बलबूते प्रेस-प्रकाशन ऊँचाई के शिखर पर पहुँच गया। प्रेस का नाम था—'निर्णय सागर प्रेस'।

मेहनत करने से सफलता अवश्य मिलती है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

समाज सेवा भी पूजा है

महाराष्ट्र के पूना जिले में एक संन्यासी हुए हैं—स्वामी परमानंद। वे माला तो रात में जपते थे, दिन में खुरपी झोले में डालकर निकलते थे और अपने संपर्क क्षेत्र में पेड़-पौधे लगाते थे। फलस्वरूप वह सारा क्षेत्र हरा-भरा बन गया। वे कहते थे—"हमारा यही भजन है, फलस्वरूप स्वर्ग जैसी हरियाली प्रत्यक्ष आँखों के सामने दीखती है।"

व्यक्ति भजन-पूजन तो करे परंतु कुछ कार्य समाज के लिए भी करते रहना चाहिए।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इक्कड़ हाथी

एक हाथी बड़ा स्वार्थी और अहंकारी था। दल के साथ रहने की अपेक्षा वह अकेला रहने लगा। अकेले में दुष्टता उपजती है, हाथी में भी दुष्टता आ गई।

एक बटेर ने छोटी झाड़ी में अंडे दिए। हाथियों का झुंड आते देखकर बटेर ने उसे नमन किया और दलपति से उसके अंडे बचा देने की प्रार्थना की। हाथी भला था। उसने चारों पैरों के बीच झाड़ी छिपा ली और झुंड को आगे बढ़ा दिया। अंडे तो बच गए, पर उसने बटेर को चेतावनी दी कि एक इक्कड़ हाथी पीछे आता होगा, जो अकेला रहता है और दुष्ट है, उससे अंडे बचाना तुम्हारा काम है। थोड़ी देर में वह आ ही पहुँचा। उसने बटेर की प्रार्थना अनसुनी करके जान-बूझकर अंडे कुचल डाले।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बटेर ने सोचा कि दुष्ट हाथी को मजा न चखाया तो वह और कितने ही प्राणियों को सताएगा। उसने अपने पड़ोसी कौवे तथा मेढ़क से प्रार्थना की। आप लोग सहायता करें तो हाथी को नीचा दिखाया जा सकता है। योजना बन गई। कौवे ने उड़-उड़कर हाथी की आँखें फोड़ दी। वह प्यासा भी था। मेढ़क पहाड़ी की चोटी पर चढ़ गया और वहीं टर-टर करने लगा। हाथी ने वहाँ पानी होने का अनुमान लगाया और चढ़ गया। अब मेढ़क नीचे आ गया और वहाँ टर्राया। हाथी ने नीचे पानी होने का अनुमान लगाया और नीचे को उतर चला। पैर फिसल जाने से वह खड्ड में गिरा और मर गया।

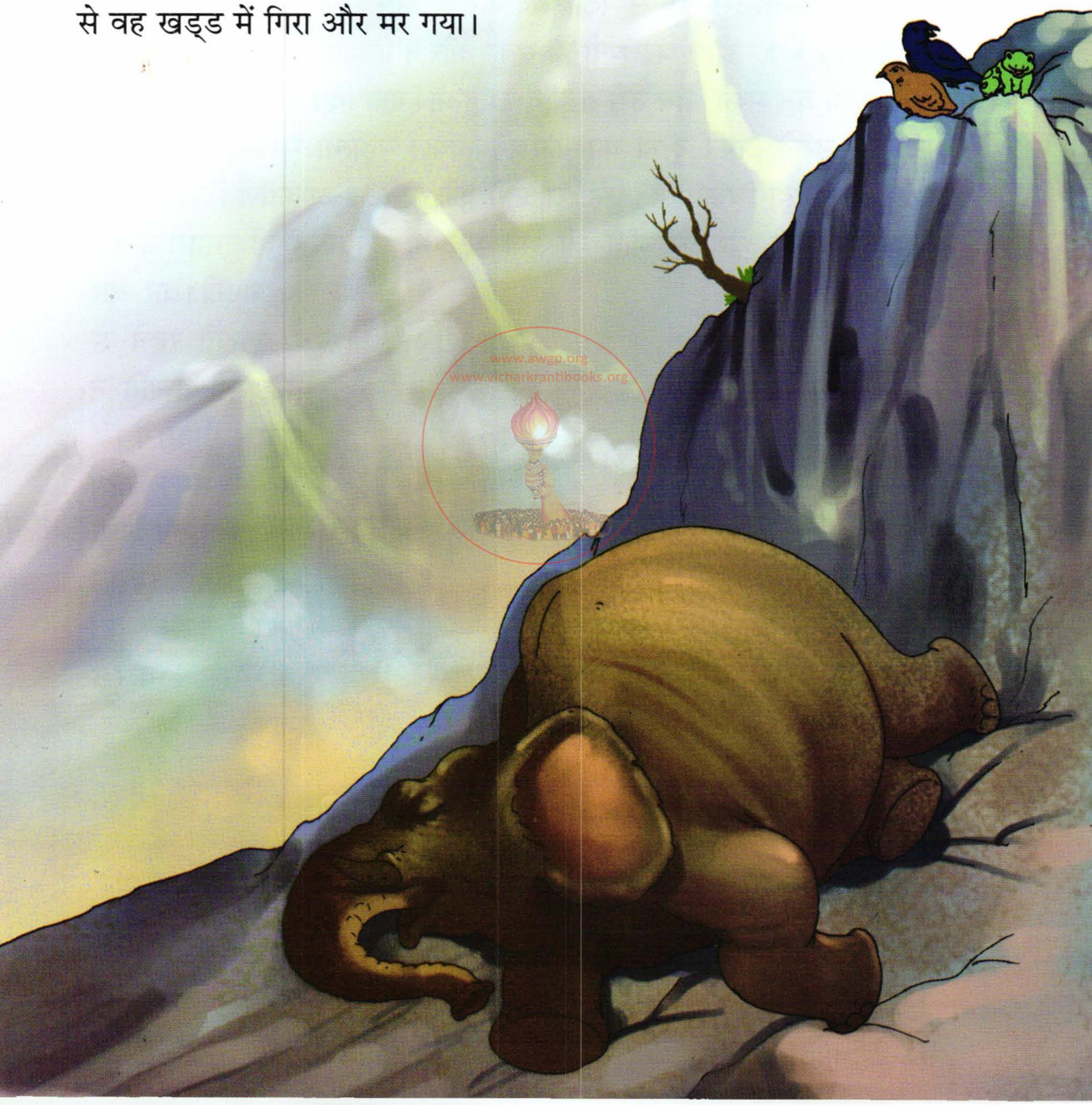

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

असफल लड़का

एक लड़के ने एक बहुत धनी आदमी को देखकर धनवान बनने का निश्चय किया। कई दिन तक वह कमाई में लगा रहा और कुछ पैसे भी कमा लिए। इसी बीच उसकी भेंट एक विद्वान से हुई। अब उसने विद्वान बनने का निश्चय किया और दूसरे ही दिन से कमाई–धमाई छोड़कर पढ़ने में लग गया। अभी अक्षर अभ्यास ही सीख पाया था कि उसकी भेंट एक संगीतज्ञ से हुई। उसे संगीत में अधिक आकर्षण दिखाई दिया । अतः उस दिन से पढ़ाई बंद कर दी और संगीत सीखने लगा।

काफी उम्र बीत गई, न वह धनी हो सका और न विद्वान, न संगीत सीख पाया और न नेता ही बन सका। तब उसे बड़ा दुःख हुआ। एक दिन उसकी एक महात्मा से भेंट हुई। उसने अपने दुःख का कारण बताया। महात्मा मुस्कराकर बोले— ''बेटा! दुनिया बड़ी चिकनी है। जहाँ जाओगे कोई न कोई आकर्षण दिखाई देगा। एक निश्चय कर लो और फिर जीते–जी उसी पर अमल करते रहो तो तुम्हारी उन्नति अवश्य हो जाएगी। बार–बार रुचि बदलते रहने से कोई भी उन्नति न कर पाओगे।'' युवक समझ गया और अपना एक उद्देश्य निश्चय कर उसी का अभ्यास करने लगा।

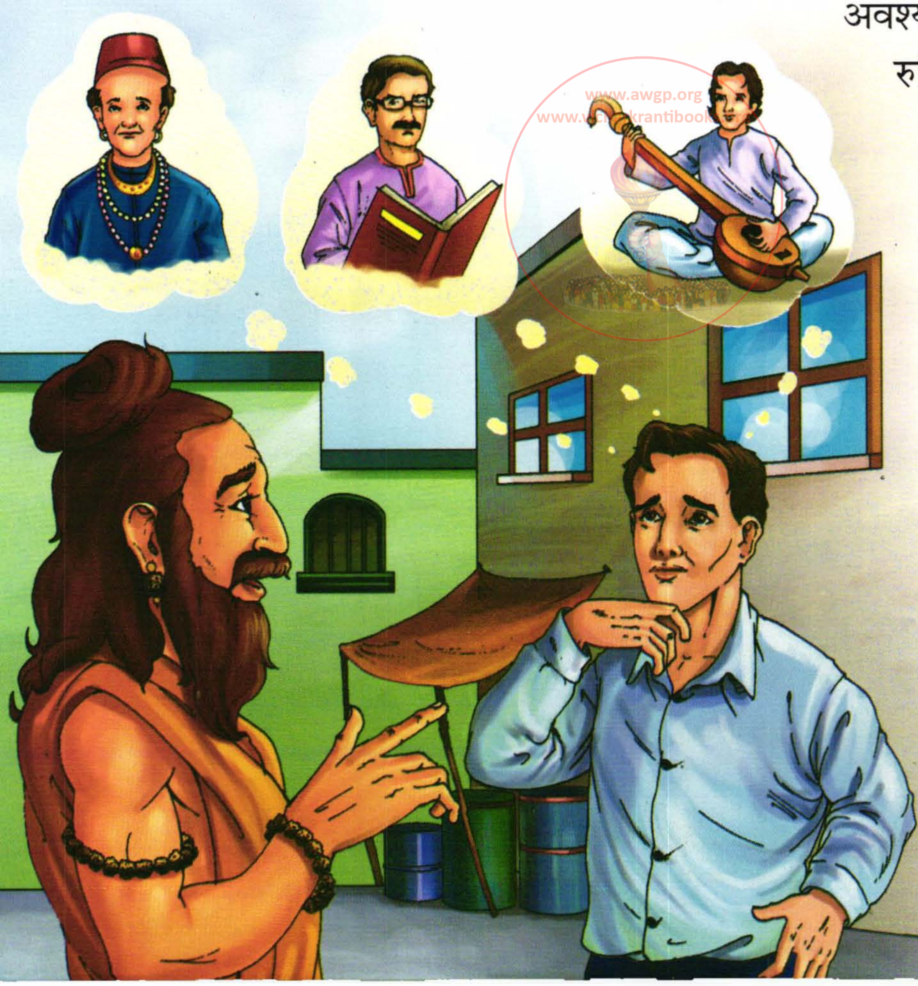

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संगठन की शक्ति

एक पिता के चार पुत्र थे। चारों में हमेशा ही झगड़ा होता रहता था। इससे उनकी शारीरिक और आर्थिक ही नहीं, मानसिक और बौद्धिक अवनति भी होती जा रही थी। यह देखकर पिता बड़ा दुखी हुआ। पिता ने मरते वक्त अपने पुत्रों को बुलाया और उन्हें एक लकड़ी का गट्ठर दिया और कहा तोड़ो इसे। लड़कों ने पूरा-पूरा प्रयत्न किया परंतु न तोड़ सके। अंत में उसने कहा—"एक-एक लकड़ी तोड़ो।" तब लकड़ी बड़े आराम से टूटने लगी। तब पिता ने कहा—"यदि इस प्रकार मिलकर रहोगे तो कोई तुम्हारा कुछ न बिगाड़ सकेगा और यदि आपस में लड़ाई-झगड़ा करते रहोगे तो इसी प्रकार जैसे लकड़ियाँ क्षण में ही टूट गईं, नष्ट हो जाओगे।" उस दिन से लड़के मिलकर रहने लगे। संगठित रहने में ही फायदा है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

छोटी भूल से संकट आया

कहते हैं कि एक बार कलिंग देश का राजा शहद खा रहा था। उसके प्याले में से थोड़ा सा शहद टपककर जमीन पर गिर पड़ा।

उस शहद को चाटने मक्खियाँ आ गईं। मक्खियों को इकट्ठी देख छिपकली ललचाई और उन्हें खाने के लिए आ पहुँची। छिपकली को मारने बिल्ली पहुँची। बिल्ली पर दो-तीन कुत्ते टूटे। बिल्ली भाग गई और कुत्ते आपस में लड़कर घायल हो गए।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कुत्तों के मालिक अपने-अपने कुत्तों के पक्ष का समर्थन करने लगे और एकदूसरे का दोष बताने लगे। उस पर लड़ाई छिड़ गई। लड़ाई में दोनों ओर की भीड़ बढ़ी और आखिर सारे शहर में दंगा हो गया। दंगाइयों को मौका मिला तो सरकारी खजाना लूटा और राजमहल में आग लगा दी।

राजा ने इतने बड़े उपद्रव का कारण पूछा तो मंत्री ने जाँचकर बताया कि भगवान आपके द्वारा असावधानी से गिराया हुआ थोड़ा सा शहद ही इतने बड़े दंगे का कारण बन गया। तब राजा समझा कि छोटी सी असावधानी भी मनुष्य के लिए कितना बड़ा संकट उत्पन्न कर सकती है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भाषण बाद में, सेवा पहले

एक दिन एक बच्चा तालाब में डूब रहा था और उसका पिता किनारे पर खड़ा उपदेश कर रहा था—"ले, मेरा कहना न मानने का फल भुगत।" तभी एक संत उधर से निकले और कूदकर बच्चे को बचाते हुए उसके पिता से बोले—"पहले उसे डूबने से बचाओ, फिर अपना भाषण दो।"

हर समय उपदेश देते रहना ही उपयुक्त नहीं है। जो व्यक्ति ऐसा करते हैं, उन्हें उनके कर्त्तव्यों का ज्ञान कराना भी ब्राह्मण का ही कार्य है।

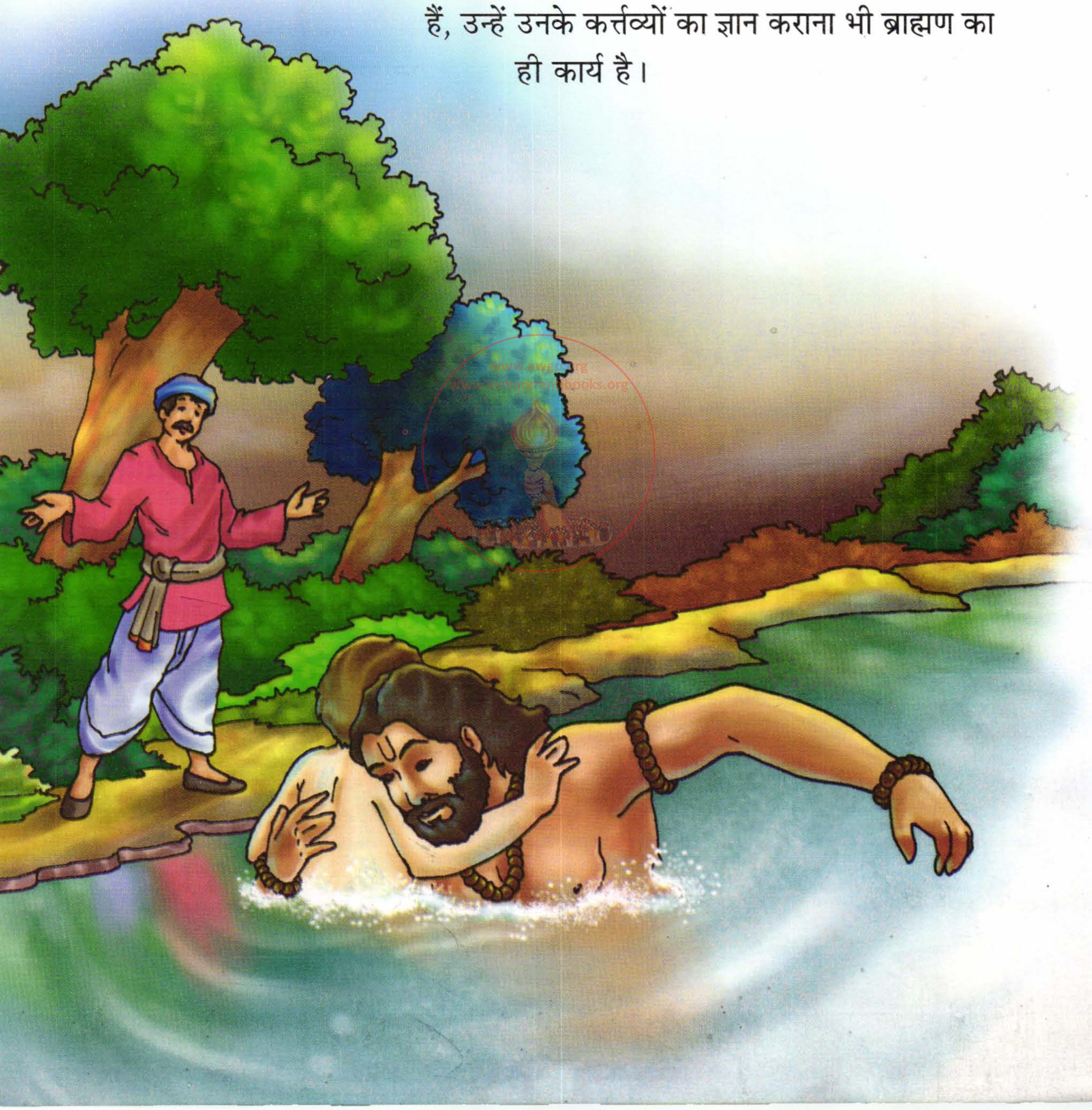

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जीवक की परीक्षा

तक्षशिला विश्वविद्यालय में सात वर्ष तक आयुर्वेद पढ़ने के उपरांत आचार्य बृहस्पति ने जीवक की परीक्षा लेकर विदा करने का मुहूर्त निकाला। उनने हाथ में खुरपी देकर कहा—"एक योजन की परिधि में एक ऐसी वनस्पति खोजकर लाओ, जो औषधि के काम न आती हो।" जीवक एक सप्ताह तक घूमे और लौटने पर बोले—"गुरुदेव! एक भी ऐसी वनस्पति नहीं मिली, जो औषधि के काम न आती हो।" बृहस्पति ने अपने शिष्य को गले लगा लिया व कहा—"वत्स! तुम परीक्षा में सफल रहे। जाओ अब आयुर्वेद का प्रकाश चारों दिशाओं में फैला दो।"

आदर्श शिक्षक मात्र अध्ययन ही नहीं कराते, छात्र को उस विद्या में ऐसा पारंगत कर देते हैं कि वह स्वर्ण बनकर निखर उठता है।

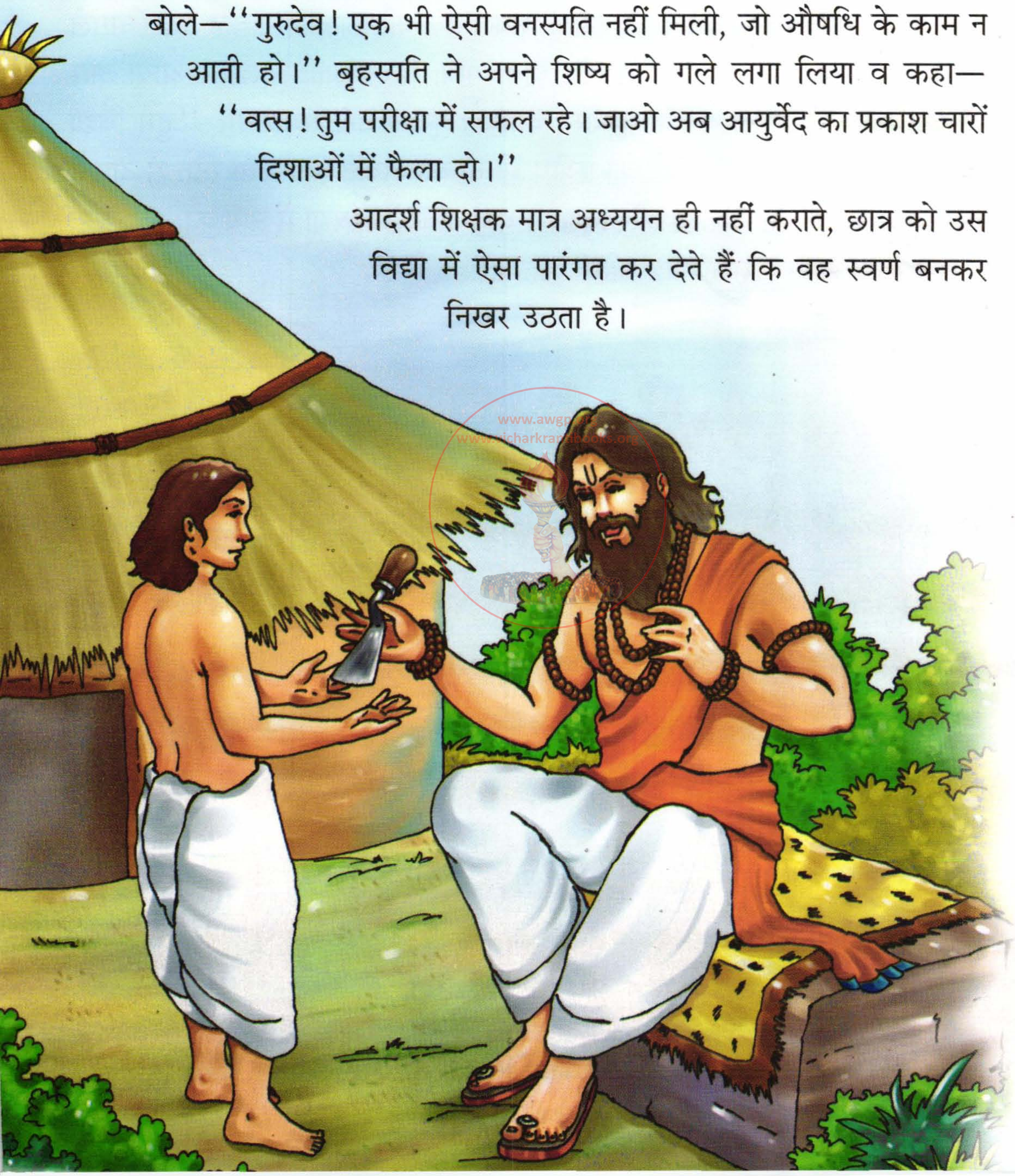

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

विद्यार्थी की तोता रटंत

गुरुकुल में बहुत सारे विद्यार्थी पढ़ते थे। वे सब शाम को निकटवर्ती वन से लकड़ी बीनने जाया करते थे। एक छात्र ने एक सर्प को देखा। जब गुरुकुल में लौटा तो एक मूर्ख छात्र ने पूछा—"वह कैसा था ?" उत्तर में उसने कह दिया—"हल की फाल के समान।" उसने 'हल की फाल के समान' वाले शब्द रट लिए और वह किसी बात का विवरण बताता तो उसकी शक्ल हल की फाल जैसा कह देता। अगले दिनों वह मूर्ख गन्ना, चूहा, गिलहरी, धान, गाय, हिरन आदि देखकर आया और उनका स्वरूप भी हल की फाल जैसा बताया। गुरु ने उसे समझाया—"तुम विद्या पढ़ने आए हो, तो अपनी बुद्धि का प्रयोग भी तो कर सकते हो। तोता रटंत से अपनी मूर्खता मत बढ़ाओ।" शिक्षा और विद्या में यही अंतर है। विद्या में ज्ञान को आत्मसात किया जाता है एवं शिक्षा मात्र बाहरी जानकारी देती है।

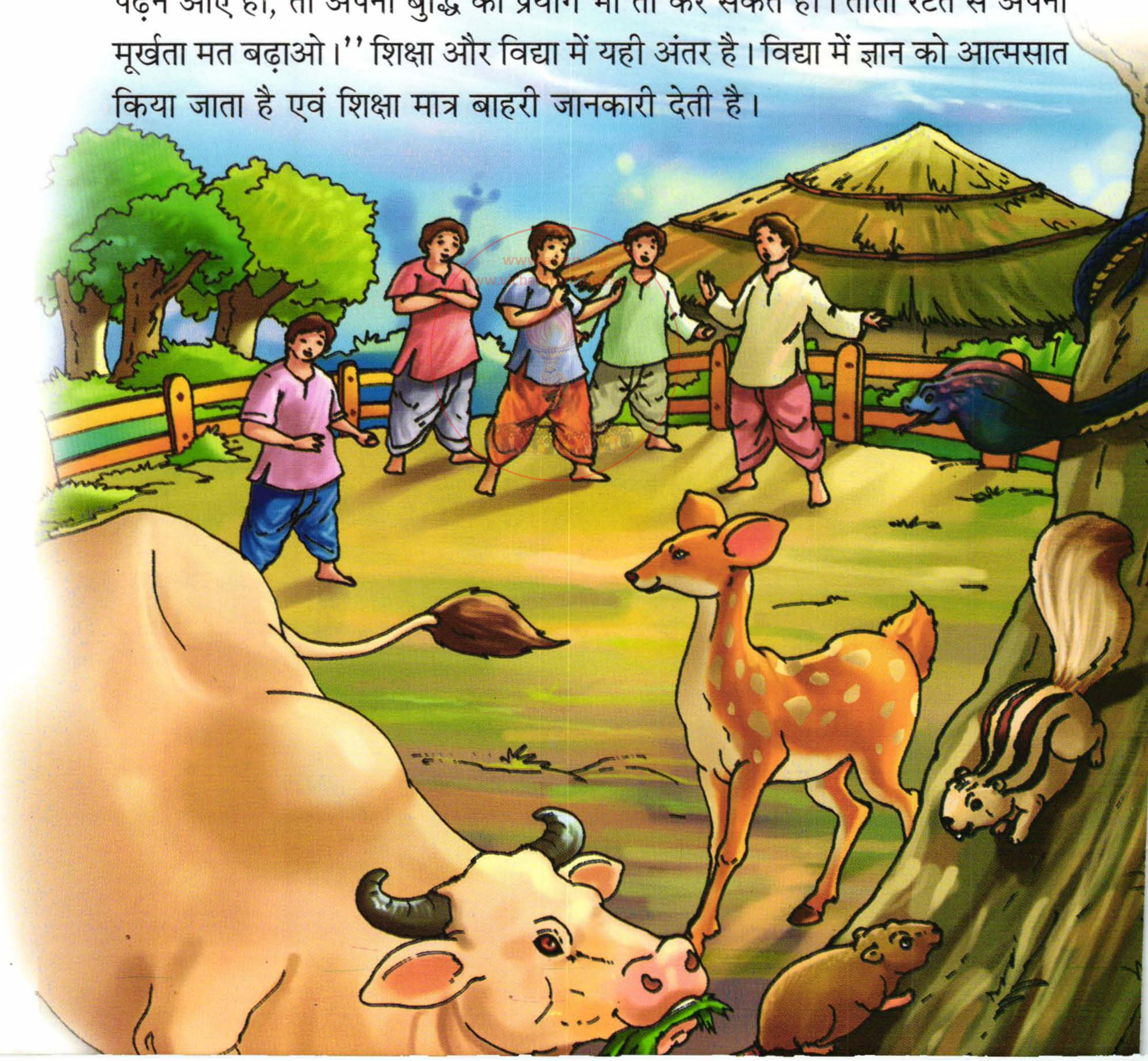

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अधिक भोले भी न बनो

दो मित्र थे। एक मित्र भोला था तथा दूसरा बहुत ही चालाक था। वे साथ-साथ खेती करते थे।

उन्होंने एक खेत में ईख (गन्ना) बोई। जब खेत बाँटने की बात चली तो भोले मित्र ने कहा—"तुम्हीं बाँट कर दो, जो दोगे वह मैं ले लूँगा।"

चालाक मित्र ने कहा—"जड़ की तरफ का आधा भाग मैं ले लेता हूँ और तुम ऊपर का हरा-हरा भाग ले लो, वह देखो कितना अच्छा है।" उसने स्वीकार कर लिया। भोले मित्र के पास ऊपर का अगोला ही आया। जिसमें रस नहीं होता है पत्ते-पत्ते ही होते हैं। व्यक्ति को इतना सीधा भी नहीं होना चाहिए कि कोई उसके भोलेपन का लाभ उठाए। अधिक भोलापन भी हानिकारक होता है। विवेक से काम लेना चाहिए।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अपने को पात्र तो बना

आँगन में दो मिट्टी के घड़े रखे थे। एक का मुँह आसमान की ओर तथा दूसरे का धरती की ओर। वर्षा आई, जिस बरतन का मुँह ऊपर को था, भर गया। जो औंधे मुँह लेटा था, खाली रह गया। खाली घड़े को बहुत गुस्सा आया। उसने भरे घड़े को भी गालियाँ दीं, वर्षा को भी कोसा।

बहुत रात बीतने तक भी जब बकवास बंद न की तो वर्षा बोली—"अभागे, चिढ़ मत, हमारे यहाँ पात्र को सब कुछ मिलता है, तू भी ऊपर को मुँह कर लेता तो तुझे भी मिलता, बावले अब भी प्रयत्न कर सिर उठा, इस बार तुझे भी दूँगी।" घड़े ने बात समझ ली, भूल स्वीकार कर ली। उसकी समझ में आ गया कि जैसे सूर्य का प्रकाश कमरे में तभी आ सकेगा जब हमारे घर के खिड़की-दरवाजे खुले हों।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चिड़िया के अंडे लौटाए

दीनबंधु एंड्रूज एक दिन माँ से बोले – "माँ देखना, मैं कितनी अच्छी चीज लाया हूँ।"

"अरे, यह क्या ले आया। यह तो किसी चिड़िया के अंडे हैं। मुझे लगता है कि तू चिड़िया के तीनों अंडे उठा लाया है। जब वह अपने घर लौटेगी, तो बहुत रोएगी बेटा।" माँ दुखी मन से बोलीं।

"अच्छा माँ! यह चिड़िया के अंडे हैं। मुझे क्या मालूम था?" वह बालक लँगड़ाते-लँगड़ाते उस पेड़ तक गया, क्योंकि चोट के कारण उसके पैर में दरद हो रहा था। वह पेड़ पर चढ़ा और उसने सब अंडे उसी घोंसले में रख दिए और पेड़ के नीचे बैठा तब तक रोता रहा, जब तक कि वह चिड़िया पेड़ पर न आ गई। चिड़िया को देखकर, उसका सारा दरद जाने कहाँ चला गया और हँसता-कूदता अपना माँ के पास लौट आया।

दीनबंधु एंड्रूज, जो जीवन भर दीनों को अपना भाई समझकर प्यार करते रहे। दीनबंधु की माता प्रत्येक प्राणी से करुणा-प्रेम भरा व्यवहार करती थीं। माँ ने ही बचपन से दीनबंधु को सभी से प्रेम-सहानुभूति-उदारता भरा व्यवहार करना सिखाया था।

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

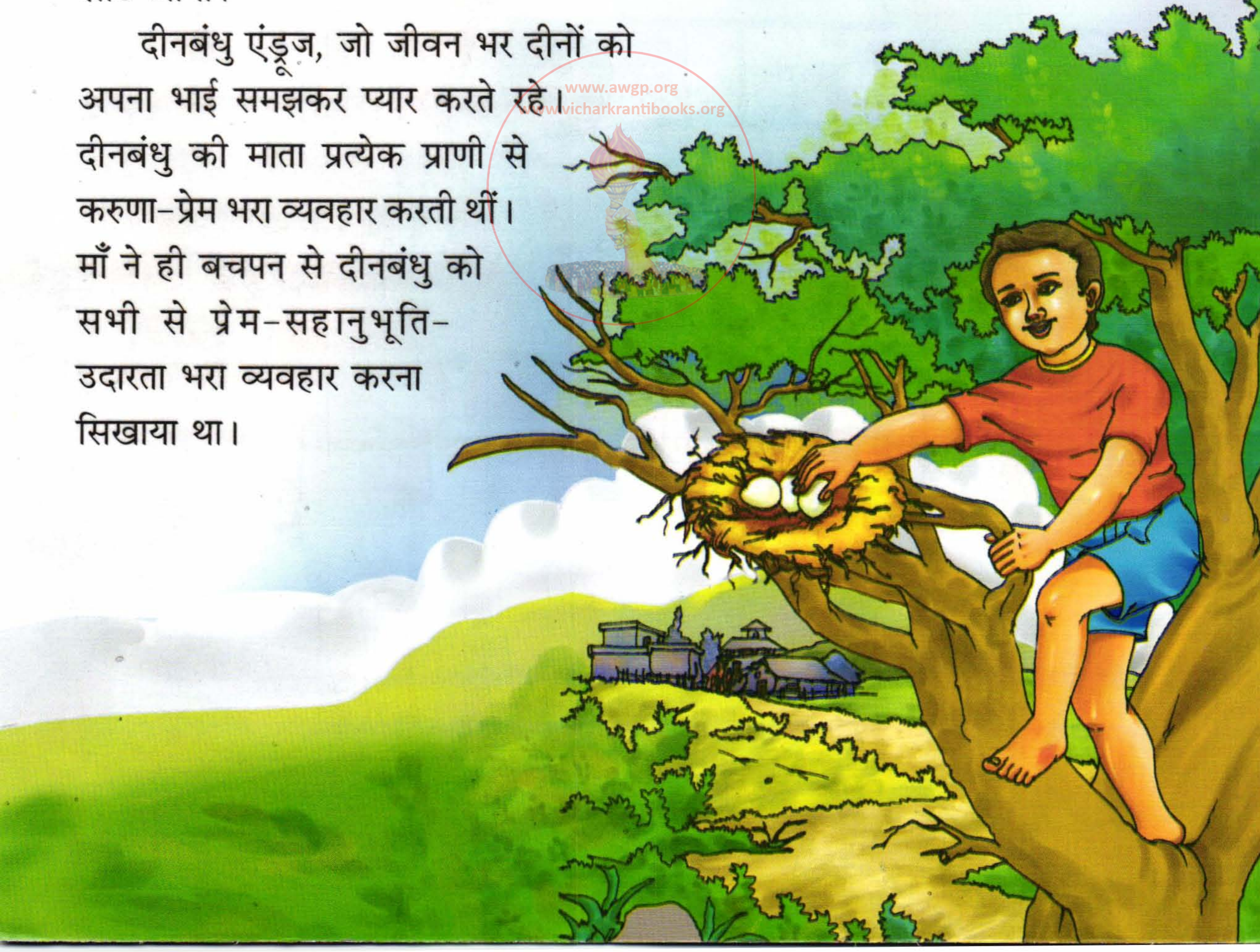

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अच्छी फसल का रहस्य

एक किसान की खेती सबसे अच्छी होती थी। सभी लोग उससे जलते थे। एक दिन उस किसान की शिकायत राजा से करने कुछ लोग पहुँचे। उन लोगों ने कहा कि यह चोरी करता होगा या कोई जादू जानता है। इस पर वह किसान राजा के पास अपना हल, बैल, लड़के, लड़की समेत पहुँचा और कहा—"मैं स्वयं भरपूर श्रम करता हूँ, इस नाते मेरे यह सहयोगी भी जीतोड़ मेहनत करते हैं। यही एक जादू है, जिससे फसल चमत्कारी ढंग से पैदा होती है।"

परिश्रम और मेहनत करने वालों को ही उसका फल मिलता है। आलसी, नकम्मे तो दूसरों से जलते तथा गरीब ही बने रहते हैं।

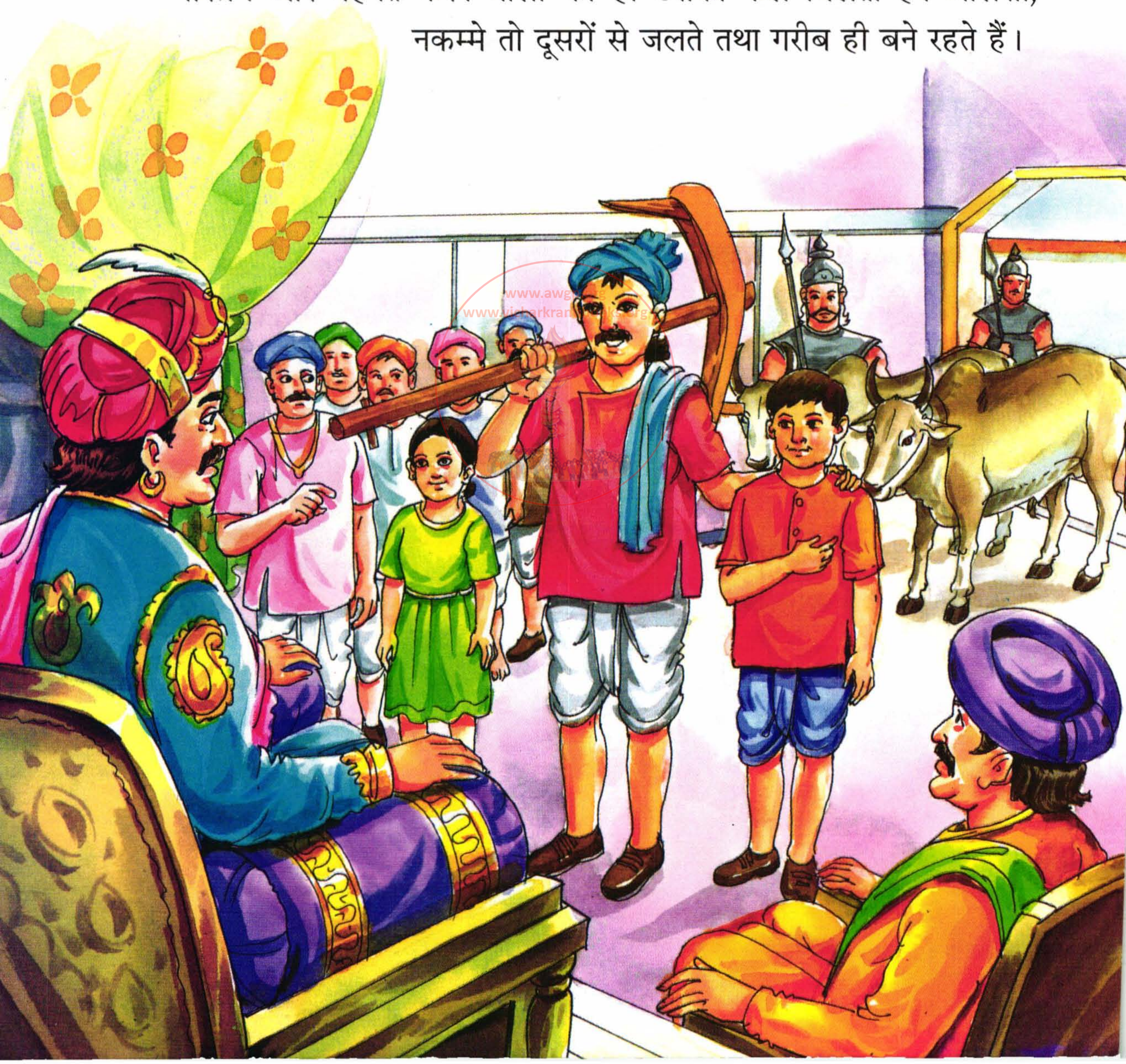

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

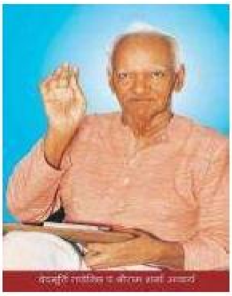

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें : http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता :** विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार :** जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक :** मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।
- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार :** जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता :** जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्‌घोषक :** जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी :** जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक :** जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्‌बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी :** जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक :** जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक :** जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्‌भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक :** जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना :** जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar
Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org